रानी मां का चबूतरा

- मन्नु भंडारी

आज रात को जब चबूतरे पर बैठक लगी तो औरतों की चर्चाका विषय पूर्णिमा को होनेवाला आयोजन था । कौन क्या पहनेगी, पूजा की थाली में क्या ले जाएगी, क्या मनौती मानेगी आदि बातों पर चर्चाहो रही थी कि रामी अपनी छोटी बहिन घन्नी को लेकर पहुँची । बूढ़े काका ने अपनी चिलम दूसरे के हाथ में थमाते हुए कहा, "बड़ी देर कर दी रामी । शायद बहिन की खातिर में लगी थी ।

"खातिर हम क्या करेंगे काका, बच्चों को सुलाते-सुलाते देर हो गई ।" फिर बूढ़ी काकी की ओर घूमकर बोली, "काकी, कल घन्नी को भी रानी मां के चबूतरे पर दीया जलाने के लिए ले जाना है ।"

"यह रानी मां का चबूतरा क्या है ?" घन्नी ने कुछ कौतूहल से पूछा ।

खरबूजे के सूखे बीज छीलते हुए काकी बोली, "वाह, कल से तुम यहां आई हो और रामी ने तुम्हें चबूतरे की बात भी नहीं बताई ? क्या बताएं बेटी, हम भागवान हैं जो रानी मां के नगर में बसते हैं । बड़ी भागवन्ती नारी थी । आज भी मुझे वह दिन याद आता है तो आंखों में आंसू आ जाते हैं, " और श्रद्धा से गदगद हो बूढ़ी काकी ने काम को बीच में छोड़कर स्वर्ग में बसनेवाली रानी मां को प्रणाम किया । बस्ती-वालों के लिए यह कथा कोई नई नहीं थी, फिर भी दत्तचित्त होकर उस कथा को ऐसे सुनने लगे जैसे पहली बार ही सुन रहे हों । स्त्रियों का तो ऐसा विश्वास था कि जितनी बार इस कथा को कहेंगी या सुनेंगी, उनका पुण्य बढ़ेगा । हाथों को माथे पर छुआकर फिर अपना छोड़ा हुआ काम संभाला और काकी बोली :

"कोई दस साल पहले की बात होगी, हमारे नगर-सेठ के बेटे पर शीतला माई का कोप हुआ । पानी की तरह पैसा बहाया, वैद-हकीमों का तांता लग गया, पर शीतला माई तो कोई और ही खेल खेलने आई थीं ।

वे इन दवाइयों से क्यों शान्त होती भला ? सब हार गए, और शीतला माई बच्चे पर ऐसी जमकर बैठीं कि न उसे मरने दें न जीने दें । मां तो सेवा करते-करते सूखकर कांटा हो गई । न खाने की सुध न सोने की । भाग से एक साधु द्वार पर आया । रानी मां की सूरत देखकर ही सारी बात समझ गया । वह कोई ऐसा-वैसा साधु भी नहीं, शीतला माई का भेजा हुआ साधु था । बोला, " बेटी, तेरा बच्चा मौत के मुहं में है, पर तेरे प्रताप से ही बचेगा । सात दिन तु अन्न-जल का त्याग कर दे तेरा बच्चा उठ खड़ा होगा ।" रानी मां के प्राण तो पहले ही आंखों में आय थे, उसपर सात दिन अन्न-जल का त्याग ! सबने बहुत समझाया कि साधू की बातों में मत आओ, पर वह नहीं मानी सो नहीं ही मानी । सात दिन बाद बच्चा तो उठ खड़ा हुआ पर रानी मां जाती रही । काकी का गला भर्रा गया, पास बैठी फूलो ने आंचल से आंसू पोंछ डाले । घन्नी, जिसने अभी तक बच्चे की सूरत नहीं देखी थी, उसके मन में जाने कैसा शूल चुभने लगा । काकी ने टूटा सुत्र जोड़ते हुए कहा :

"सारा गांव इकट्ठा हुआ उस देवी के दर्शन करने को, अरथी ऐसे उठी कि राजा-महाराजाओं की भी क्या उठेगी ! नगर-सेठ ने बहू ... "

बीच में ही बात काटकर फूलो बोली, "केसर के छींटे की बात तो कही ही नहीं।" फिर उसने कुछ इस भाव से घन्नी को देखा मानो कह रही हो, इस घटना की राई-रत्ती बात केवल काकी ही नहीं वह भी जानती है।

"हाँ बेटी, जब उसकी अरथी उठी तो आसमान से केसर की बूंदें बरसी थीं। "

"फिर सेठजी ने अपने बगीचे में रानी मां की याद में एक चबूतरा बनवाया। हर पूरनमासी को नगर की औरतें वहां दीया जलाने जाती हैं, अपने बच्चों के लिए मनौती मनाती हैं।"

रामी ने जरा काकी की ओर झुककर फुसफुसाते स्वर में कहा, "घन्नी को भी इसीलिए बुलाया है काकी, कि कल इससे दिया जलवा दूं। ब्याह को चार साल होने आए, अभी तक कोख नहीं फली। एक-दो साल और बीत गया तो वह किसी और के घर में डाल लेगा।"

"जरूर दिया जलवा, भगवान करेगा तो साल बीतते-न-बीतते गोद में बाल-गोपाल खेलने लगेगा। रानी माँ का आशीर्वाद कभी अकारथ नहीं जाने का। "

घन्नी लज्जा गई, साथ ही उसने यह भी महसूस किया कि यहाँ आकर उसने अच्छा ही किया।

काकी से जरा दूर बैठा गोपाल, जो बस्ती का सबसे मसखरा जवान था, बोल उठा, "काकी, मैं तो तुम्हारा और तुम्हारी रानी मां का कमाल तब मानूं जब तुम गुलाबी को रास्ते पर लगा दो। "

"नाम मत ले उस चुड़ैल का मेरे सामने। वह कोई मां है, कसाइन है कसाइन। नहीं तो रानी मां के चबूतरे में तो वह ताकत है कि पत्थर में भी ममता उपज जाये। पर वह तो ऐसी कि कभी उधर मुंह भी नहीं करती। भगवान करे उस का सत्यानास हो जाए। सारी बस्ती पर किसी दिन पाप ला देगी। "

काका ने स्वर को ज़रा कोमल बनाकर कहा, "क्यों कोस रही है जेठा की मां ? बेचारी मुसीबत की मारी है। "

"तुम्हारा तो दूध ही झरता रहता है उसके लिए। बड़ी मुसीबत-मारी है।" गुलाबी के प्रति काका की इस सहानुभूति से चिढ़कर काकी बोली, "मुसीबत की मारी है तो सारी बस्ती मदद करने को तैयार है, पर वह तो हेकड़ीवाली ऐसी कि अपना ठेंगा ऊपर रखेगी। अरे मैं तो कहूं, जो अपने आदमी को झाड़ू, मारकर निकाल दे वह किसकी सगी होगी ?"

"अब आदमी तो उसका था ही ऐसा कि मारकर निकाल दिया जाये। वह पसीना बहाकर कमाती और वह घर में बैठा दारू पीता। आखिर उसे दो बच्चे भी तो पालने थे। " काका ने फिर गुलाबी का पक्ष लिया। काकी तैश में आ गई और बात रानी मां से सरककर गुलाबी पर आ लगी।

"बड़े बच्चे पाल रही है मुंहझौंसी। सबेरे उस कालकोठरी में बन्द करके जाती है तो शाम को आकर खोलती है।"

गुलाबी के बगल की कोठरी में रहनेवाली रामी बोली, "काकी, घन्नी तो आज ही कह रही थी कि जीजी मुझे दिला दो एक बच्चा, मैं पाल लुंगी। "

"वह क्यों देने लगी ? वह तो उनको कोठरी में बन्द करके मारेगी ... "

काकी अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाई थी कि दूर खड़ी एक छाया-कृति पास आई और बोली, "मारूंगी तो अपने बच्चे के मारूंगी। तेरे बच्चे के तो नहीं मारूंगी ... तू क्यों मेरे बच्चों कि चिन्ता में सूख रही है ? खबरदार जो आगे से नाम लिया मेरे बच्चों का। बड़ी धरमात्मा बनी बैठी है। "

गुलाबी की उपस्थिति से क्या सत्रीवर्ग और क्या पुरूषवर्ग, दोनों ही ज़रा चौंक पड़े । काका ने बात संभालते हुए कहा, "क्यों बिगड़ रही है गुलाबी ? हम तो तेरे भले की ही बात कर रहे हैं । बन्द करके जाती है, कभी गरमी में अन्दर के अन्दर ही घुटकर मर गए तो ?"

"मर गए तो पांच पैसे का परसाद चढ़ाऊँगी, पर मरें भी तो । मेरी जान को लगे हुए हैं निगोड़े ?"

"तू तो परसाद चढ़ाएगी, पर सारी बस्ती को तो हत्या लगेगी । हमें क्यों पाप में सान रही है ? "

"आ हाSS । बड़े आए बस्तीवाले ! पहले कोठरी खोलकर जाती थी तो मेरा छोरा सरकते-सरकते मोरी में आकर गिर गया । किसी ने उठाया तो नहीं ! बड़े अपने बैठते हैं । छोरा भी तो जाने किस माटी का बना हुआ है, सारे दिन मोरी के सड़े पानी में सड़ता रहा, पर मरा नहीं; मर जाता तो पाप कटता ।" गुलाबी क्रोध में बड़बड़ाती गली के नल पर चली गई ।

"कहो काकी, कैसी रही ?" गोपाल ने छेड़ते हुए पूछा ।

"कौन मुंह लगे इस चुड़ैल के !" पर काकी का मन इतना खिन्न हो उठा कि वे अपने बीजों की पोटली उठाकर चल दीं । धीरे-धीरे सभी उठ गये और चबूतरे की सभा विसर्जित हो गई ।

सवेरे सात बजे की सीटी बजी तो गुलाबी ने एक झटके के साथ अपनी कोठरी का दरवाजा बन्द किया । उसे बगल की कोठरी में से रामी-घन्नी की फसफुसाहट सुनाई दी । बिना पूरी बात सुने ही वह भभक उठी, "जितनी बातें बना सको बना लो चुड़ैलो । मैं तुम्हारी दबैल नहीं जो डर जाऊंगी ।"

रामी ने वहीं बैठे-बैठे हाँक लगाई, "अपने रस्ते लग गुलाबी । किसका हियी फूटा है जो सवेरे-सवेरे तुझ नासपीटी का नाम लेगा ।" गुलाबी कुछ कहती उसके उसके पहले ही उसके दो साल के बच्चे का क्रन्दन कोठरी की दीवारों को चीरकर गली के सुनसान वातावरण में फैलने लगा । झल्लाकर उसने कोठरी खोली और अपनी नौ साल की लड़की मेवा की पीठ पर एक लात जमाते हुए बोली, "नौ बरस की घींग हो गई, एक बच्चा नहीं रख जाता । चल उसे गोद में उठाकर रख ।" और उसी झल्लाहट में उसने कोठरी बन्द कर दी और दौड़ पड़ी ! सात की सीटी बज चुकी थी । और वह जानती थी कि अब यदि वह सारा रास्ता दौड़कर ही पार नहीं करेगी तो ठेकेदार वहां बैठी अनेक उम्मीदवारों में से किसी को भी काम दे देगा और वह आज की मज़दूरी से जाती रहेगी; फिर वह सत्तू नहीं ला सकेगी, दाल नहीं ला सकेगी ... उसने गति और बढ़ा दी, उस समय वह भूल गई कि रामी ने उसे नासपीटी कहा है या कि उसका बच्चा रो रहा है ।

शाम को वह लौटी तो क्लान्त हाथों से उसने अपनी कोठरी का दरवाजा खोला । देखा, मेवा एक कोने में लुढ़की पड़ी सो रही है और दो साल का वह मांस का लोथड़ा मैले में सना हुआ मिमिया रहा था । रोने की ताकत तो उसमें शायद रही भी नहीं थी । गुलाबी ने एक पूरे हाथ की धौल कोने में सोती हुई छोरी की पीठ पर जमाई ... पड़ी-पड़ी सो रही है चुड़ैल । चल, उठकर चूल्हा जला ।" और वह उस मैल में सने बच्चे को उठाकर गली के नल पर चली । बराबर उसके मुंह से गालियां बरस रही थीं । चबूतरे पर उस समय काका अकेले बैठे थे, गुलाबी को बड़बड़ाती हुई जाते देखा तो टोक दिया, "किसे कोस रही है गुलाबी ? अरे कभी तो तु भी हंस-बोल लिया कर ।"

"हंस-बोलकर मुझे किसीको रिझाना नहीं है । बड़े आए हैं सीख देनेवाले । तुम्हें तो नहीं कोस रही ? कोस रही हूं उस दारूखोर को जो मेरी जान को ये कीड़े-मकोड़े छोड़ गया ।"

"और मैं तो तेरे भले की बात कह रहा हूं। चार जनों के बीच आकर बैठाकर तो तेरा भी मन बहल जाए, पर तू तो सबको काटने का दौड़ती है।

"हां, हां मैं तो कटखनी हूं, क्यों मेरे मुंह लगते हो ? ज्यादा बकवास की तो दो-चार तुम्हें भी सुना दुंगी। बड़े आये हैं दरद दिखाने वाले।" और वह भन्नाती हुई नल पर चली गई। छोकरे को धोया, कपड़ा धोया, और बड़बड़ाती अपनी कोठरी की ओर चली पड़ी। काका ने उसे फिर नहीं टोका।